हेराफेरी | सहायक कर्मचारी की गिरफ्तारी के बाद जांच का दायरा बढ़ा

सरकारी चावल से करोड़ों का खेल? एफसीआई की भूमिका पर सवाल

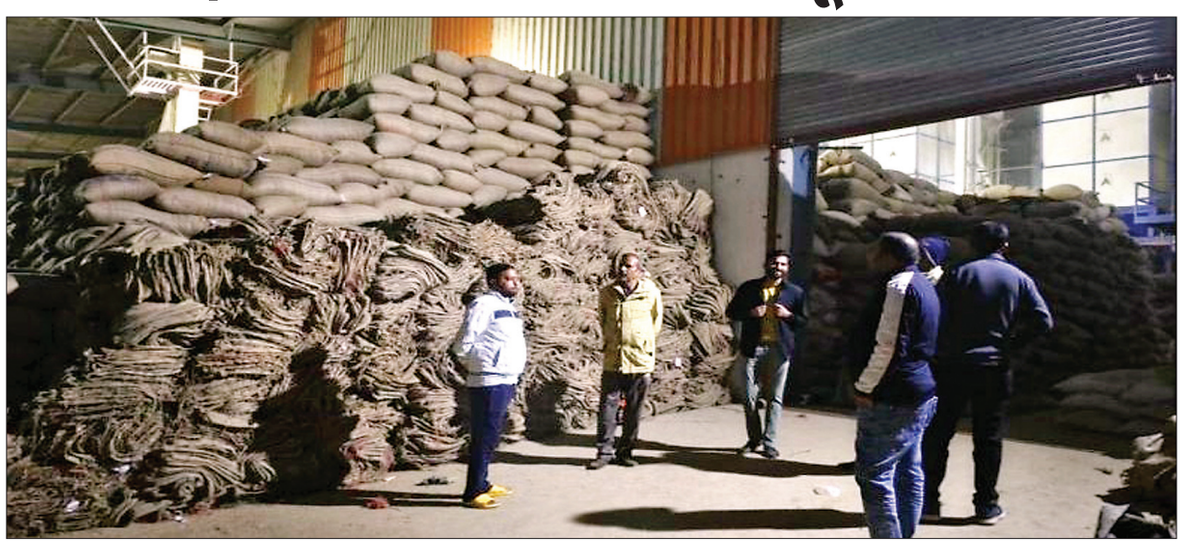

नवभारत, बालाघाट। प्रदेश के बहुचर्चित सरकारी चावल हेराफेरी मामले में विशेष जांच दल की जांच अब निर्णायक चरण में पहुंचती दिखाई दे रही है। एफसीआई के सहायक ग्रेड-1 कर्मचारी सुरेंद्र सूर्यवंशी की गिरफ्तारी के बाद जांच की दिशा तेज हो गई है। सूत्रों के अनुसार, पूछताछ में मिले इनपुट के आधार पर जांच एजेंसी अब गोदामों से चावल की निकासी, परिवहन, भुगतान प्रक्रिया और विभागीय भूमिका की विभिन्न कड़ियों की पड़ताल कर रही है।

एसआईटी की पूछताछ में मिले तथ्यों के आधार पर जांच का दायरा विस्तृत किया गया है। जांच एजेंसी अब यह पता लगाने का प्रयास कर रही है कि सरकारी चावल की सप्लाई, परिवहन और दस्तावेजी प्रक्रिया में किन-किन स्तरों पर कथित अनियमितताएं हुईं। सूत्रों के मुताबिक, विभिन्न विभागीय अधिकारियों, कर्मचारियों, राइस मिलर्स और एथेनॉल प्लांट से जुड़े व्यक्तियों की भूमिका की भी जांच की जा रही है।

जांच एजेंसियां कथित तौर पर गोदाम से चावल की निकासी, परिवहन श्रृंखला, भुगतान के तरीकों और दस्तावेजों का मिलान कर रही हैं। सूत्रों का दावा है कि कुछ डिजिटल और अन्य प्रकार के साक्ष्यों के आधार पर पूरे नेटवर्क की कार्यप्रणाली को समझने का प्रयास किया जा रहा है। हालांकि, इन दावों की आधिकारिक पुष्टि अभी नहीं हुई है।

इधर, मामले के एक अन्य आरोपी अविनाश कावरे की पुलिस रिमांड समाप्त होने के बाद स्वास्थ्य खराब होने पर उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। वह पुलिस निगरानी में है। इस घटनाक्रम के बाद भी मामले को लेकर विभिन्न चर्चाएं तेज हैं, हालांकि इस संबंध में कोई आधिकारिक निष्कर्ष सामने नहीं आया है।

भुगतान और ट्रांसपोर्ट नेटवर्क की हो रही जांच

सूत्रों के अनुसार, मामले में एक अन्य संदिग्ध से भी पूछताछ की जा रही है। हालांकि पुलिस ने आधिकारिक रूप से किसी नई गिरफ्तारी की पुष्टि नहीं की है। जांच अधिकारियों का फोकस अब इस बात पर है कि कथित हेराफेरी में शामिल पूरे नेटवर्क की वास्तविक भूमिका सामने लाई जा सके।

पौधा लगाकर उसे वृक्ष बनाना भी जिम्मेदारी : पारधी

भजियापार में 'वृक्ष मित्र अभियान' के तहत किया गया पौधरोपण

नवभारत कटंगी 5 अगस्त। जनपद क्षेत्र कटंगी के ग्राम भजियापार में रविवार को 'वृक्ष मित्र अभियान' के अंतर्गत भव्य पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों, वन समिति, जनपद अधिकारियों और विद्यालय परिवार ने मिलकर पौधे लगाए और पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया। कार्यक्रम में अवलेश पारधी, सरपंच प्रतिनिधि झनक ठाकरे, वन समिति अध्यक्ष संतोष सोनवाने, गोधनलाल पटले, मितेश पटले, चंदनलाल पटले, संतोष पटले, सचिव देवकरण कावरे उपस्थित रहे।

पौधे हमारी सबसे बड़ी पूंजी हैं

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अवलेश पारधी ने कहा कि 'वृक्ष केवल प्रकृति की धरोहर नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित और समृद्ध भविष्य की सबसे बड़ी पूंजी हैं। यदि हमें स्वच्छ वातावरण, पर्याप्त वर्षा, शुद्ध जल और स्वस्थ जीवन चाहिए, तो प्रत्येक नागरिक को पौधरोपण को अपनी जिम्मेदारी बनाना होगा। आइए, हम सभी संकल्प लें कि केवल पौधे लगाएंगे ही नहीं, बल्कि उनकी देखभाल कर उन्हें वृक्ष बनने तक संरक्षित भी करेंगे।

लोगों को इस जनआंदोलन से जोड़े

उन्होंने कहा कि 'एक पेड़ मां के नाम' तथा 'वृक्ष मित्र अभियान' के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों को इस जनआंदोलन से जोड़ें और हरित, स्वच्छ एवं समृद्ध कटंगी के निर्माण में अपना योगदान दें। कार्यक्रम के अंत में सभी ने अधिक से अधिक पौधे लगाने और उनकी देखभाल करने का संकल्प लिया।

नैनपुर स्टेशन के सामने खुले नाले से हादसे का डर

रेलवे स्टेशन प्रबंधक बेखबर, कोई संकेतक या सुरक्षा उपाय नहीं

नैनपुर, नवभारत। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के नागपुर डीविजन के नैनपुर रेलवे स्टेशन के मुख्य प्रवेश द्वार के ठीक सामने बना एक विशाल और गहरा नाला रेल यात्रियों और स्थानीय लोगों के लिए जानलेवा साबित हो रहा है। रोज़ाना हज़ारों लोगों की आवाजाही वाले इस मुख्य मार्ग पर यह नाला पिछले कई हफ्तों से दुर्घटनाओं को न्योता दे रहा है, लेकिन संबंधित विभाग रेलवे स्टेशन प्रबंधक पूरी तरह से आंखें मूंदे बैठा है।

बताया जाता है कि स्टेशन के ठीक सामने मुख्य सड़क पर बना यह बड़ा नाला इतना गहरा है कि दोपहिया वाहनों का संतुलन बिगड़ना आम बात हो गई है। बारिश के दिनों में जलभराव के कारण यह गड्ढा छिप जाता है, जिससे स्थिति और भी भयावह हो जाती है।

सबसे ज़्यादा खतरा रात के समय स्टेशन आने-जाने वाले यात्रियों और बाइक सवारों को यह दिखाई नहीं देता। जिससे ऑटो-रिक्शा के पलटने का डर बना रहता है और आए दिन बाइक सवार गिरकर चोटिल हो रहे हैं। वहीं गड्ढे से बचने के चक्कर में वाहन चालक गलत दिशा में गाड़ी मोड़ते हैं, जिससे स्टेशन मार्ग पर लंबा जाम लग जाता है।

जनता में भारी आक्रोश

स्थानीय लोगों और दैनिक यात्रियों का कहना है कि उन्होंने रेलवे स्टेशन प्रबंधक और रेलवे के अधिकारियों से कई बार लिखित शिकायत की है, लेकिन अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई। वहीं स्थानीय निवासी का कहना है कि यह सड़क शहर को रेलवे स्टेशन से जोड़ने वाली सबसे मुख्य सड़क है। रोज़ाना यहां हजारों लोग गुजरते हैं। लगता है रेल प्रशासन किसी बड़े हादसे का इंतज़ार कर रहा है, तभी इस नाला को व्यवस्थित किया जाएगा।'

क्षेत्रवासियों ने दी आंदोलन की चेतावनी

स्टेशन से यात्रा करने वाले यात्रियों और स्थानीय नागरिकों ने चेतावनी दी है कि यदि अगले 48 घंटों के भीतर इस जानलेवा नाला की मरम्मत या उचित प्रबंधन नहीं किया गया तो वे स्टेशन परिसर के बाहर विरोध प्रदर्शन करेंगे। लोगों की मांग है कि नाला को तुरंत भरकर पक्की सीमेंटेड या डामर की कोटिंग की जाए। एवं जब तक मरम्मत का काम पूरा न हो, तब तक वहां सांकेतिक बोर्ड और बैरिकेड्स लगाए जाएं।

एक नजर में

पीएम किसान योजना का लाभ जारी रखने के लिए वार्षिक ई-केवाईसी अनिवार्य

बालाघाट। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम-किसान) योजना के तहत जिले के सभी पंजीकृत किसानों के लिए प्रतिवर्ष ई-केवाईसी कराना अनिवार्य कर दिया गया है। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि समय पर ई-केवाईसी नहीं कराने पर किसानों को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की आगामी किस्त प्राप्त करने में कठिनाई हो सकती है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत पात्र किसानों को प्रतिवर्ष 6,000 रुपये की सहायता राशि तीन समान किश्तों में प्रदान की जाती है। योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए पीएम-किसान ई-केवाईसी, आधार से लिंक बैंक खाते का डीबीटी सक्षम होना तथा फार्मर आईडी सहित अन्य आवश्यक औपचारिकताएं पूरी होना जरूरी है। आयुक्त, भू-संसाधन प्रबंधन, ग्वालियर के निर्देशानुसार जिले के लगभग 3.42 लाख पंजीकृत किसानों के लिए बायोमेट्रिक अथवा फेस ऑथेंटिकेशन के माध्यम से प्रतिवर्ष ई-केवाईसी अनिवार्य की गई है। किसान अपनी ई-केवाईसी ग्राम के पटवारी से पीएमकिसान एप्प के माध्यम से, निकटतम कॉमन सर्विस सेंटर पर बायोमेट्रिक सत्यापन कराकर अथवा पीएमकिसान एप्प में लाभार्थी लॉगिन के जरिए स्वयं भी कर सकते हैं।

महाविद्यालय के प्रयोगशाला सहायक संतोष कुमार त्रिवेदी की प्रयोगशाला तकनीशियन शिक्षक पद पर हुई पदोन्नति

वारासिवनी। शंकर साव पटेल शासकीय महाविद्यालय वारासिवनी में लंबे समय से सेवारत प्रयोगशाला सहायक संतोष कुमार त्रिवेदी के लिए वर्ष 2026 की यह छमाही अत्यंत हर्ष और गौरव की सौगात लेकर आई है। विगत लगभग 36 वर्षों से संस्था को अपनी निष्ठावान सेवाएँ दे रहे संतोष त्रिवेदी का पदोन्नति का बहुप्रतीक्षित इंतजार अब समाप्त हो गया है। उन्हें प्रयोगशाला तकनीशियन शिक्षक के पद पर पदोन्नत किया गया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार संतोष कुमार त्रिवेदी वर्ष 1990 से वारासिवनी के शासकीय शंकर साव पटेल महाविद्यालय में प्रयोगशाला सहायक के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। अपनी नियुक्ति के समय से ही वे महाविद्यालय की प्रयोगशालाओं का सुचारू संचालन और विद्यार्थियों की सहायता पूरी लगन से करते आ रहे थे। वे पिछले काफी समय से अपनी पदोन्नति की राह देख रहे थे।

सीआरपीएफ जवान विष्णु बघेल असम के कैम्प में हुई गोलीबारी में वीरगति को प्राप्त

नवभारत, बालाघाट। भीकेवाड़ा (शेरपार) निवासी सीआरपीएफ के जवान विष्णु बघेल असम के केम्प में हुई गोलीबारी की दुखद घटना में वीरगति को प्राप्त हो गए।44 वर्षीय विष्णु बघेल, श्रीराम बघेल के इकलौते पुत्र थे और सीआरपीएफ की 34 वीं बटालियन में पदस्थ थे। उनके शहीद होने की खबर से पूरे गांव और जिले में शोक की लहर है

जानकारी के अनुसार, 4 अगस्त की सुबह करीब 7 बजे 34 वीं बटालियन के कैंप में गेट गार्ड ड्यूटी पर तैनात एएसआई बलानी प्रेमावरम ने गार्ड रूम से इंसास राइफल उठाकर क्वार्टर गार्ड

में अचानक फायरिंग शुरू कर दी। इस दौरान विष्णु बघेल के पेट में गोली लगी। उन्हें तत्काल अस्पताल ले जाया गया, लेकिन उपचार के दौरान उन्होंने दम तोड़ दियद्य

घटना के बाद आरोपी एएसआई बैरक पहुंचा, जहां उसने फिर गोलीबारी की। इस हमले में एसआई राम नवल सिंह यादव की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि एएसआई माने गोबिंद के पैर में गोली लगने से वे घायल हो गए। बाद में आरोपी एएसआई ने उसी राइफल से स्वयं को गोली मारकर आत्महत्या कर ली।

शहीद विष्णु बघेल के निधन से उनके परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। वे अपने माता-पिता के इकलौते पुत्र थे और लंबे समय से सीआरपीएफ में देश सेवा कर रहे थे। गांव में मातम का माहौल है और बड़ी संख्या में लोग परिजनों को सांत्वना देने पहुंच रहे हैं।

श्रमिकों का शक्ति प्रदर्शन17 को राष्ट्रव्यापी आंदोलन की तैयारियां तेज

नवभारत, बालाघाट। भारतीय मजदूर संघ (बीएमएस) के राष्ट्रव्यापी आंदोलन के तहत 17 अगस्त को नगर में भी श्रमिकों का बड़ा शक्ति प्रदर्शन देखने को मिलेगा। आंदोलन की तैयारियों को लेकर मंगलवार को भारतीय मजदूर संघ जिला इकाई, की महत्वपूर्ण बैठक जिला कार्यालय, बस स्टैंड में जिलाध्यक्ष योगेश यादव की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक में आंदोलन को ऐतिहासिक एवं सफल बनाने के लिए विस्तृत रणनीति तैयार की गई और जिलेभर के श्रमिकों को अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने का आह्वान किया गया।

पुलिया का निर्माण कार्य अधूरा, विधायक ने संबंधित अधिकारियों के साथ किया निरीक्षण

नवभारत, वारासिवनी। विधानसभा क्षेत्र के ग्राम पंचायत बिटोडी और डोके के मध्य लगभग 30 लाख रुपयों की लागत से नवीन पुलिया का निर्माण किया गया है।मगर पुलिया का निर्माण करने के बाद ठेकेदार पुलिया के दोनों और एप्रोज सड़क बनाना भूल गया।जिससे बारिश के समय स्कूल के छात्र-छात्राएं और ग्रामीणजन हादसे का शिकार हो रहे है।जिससे ग्रामीणजनों में भारी आक्रोश व्याप्त है।ठेकेदार को ग्रामीणों द्वारा एप्रोज सड़क बनवाने के लिए बार-बार निर्देशित किया गया।मगर ठेकेदार इसे अनदेखी ही करता रहा।जिसके बाद विधायक विवेक विक्की पटेल ने ग्रामीणोंजनों,ठेकेदार और संबंधित अधिकारियों के साथ मौके पर पहुंचकर निरीक्षण किया।और ठेकेदार को जमकर फटकार लगाते हुए जल्द दोनों ओर एप्रोज सड़क बनवाने के निर्देश दिए।इस दौरान सब इंजीनियर किरण गजभिए,सरपंच खुमेंद्र मड़ावी,खुपचंद बिसेन,यादौराव बिसेन,राजेश पटले,दुलीचंद पटले, उमेश पटेल,तिशांक पटले,शत्रुघ्न पटले,राजकुमार चौधरी,संदेश बिसेन सहित ग्रामीणोंजन मौजूद रहे।

ग्राम बिटोडी निवासी पूर्व सरपंच तेजराम नगपुरे ने कहा कि ठेकेदार ने जब से पुलिया का कार्य प्रारंभ किया गया था।तभी से उसका काम ना ही समय सीमा के पूर्ण किया गया।बारिश के पूर्व उसे कई बार पुलिया के दोनों ओर एप्रोज सड़क बनवाने बोला गया। मगर उसने किसी भी ग्रामीणजन की बातों को नहीं सुना।अभी बारिश का समय है।यहां से स्कूलो के बच्चों के साथ ही वाहन का आवागमन होता है।और रोज कीचड़ में वाहन फंस रहे है।हमने विधायक और संबंधित अधिकारियों को मौके पर बुलवाकर चेतावनी दी है।

पीएचसी में स्वास्थ्य कर्मियों ने किया श्रमदान

डॉ. जगजीवन मेश्राम के निर्देशन में हर्बल गार्डन की साफ-सफाई

नवभारत कटंगी 5 अगस्त। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र मेहकेपार तिरोड़ी कटंगी में आज स्वास्थ्य कर्मचारियों ने स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए श्रमदान किया।

मेडिकल ऑफिसर डॉ. जगजीवन मेश्राम के दिशा-निर्देशन में पीएचसी परिसर में स्थित हर्बल गार्डन की साफ-सफाई की गई। सभी स्वास्थ्य कर्मचारियों ने स्वेच्छा से श्रमदान कर गार्डन की घास-खरपतवार हटाई और परिसर को स्वच्छ बनाया। इस अवसर पर डॉ. मेश्राम ने कहा कि स्वच्छता केवल मरीजों के इलाज के लिए ही नहीं, बल्कि स्वस्थ जीवन के लिए भी जरूरी है। हर्बल गार्डन में औषधीय पौधे लगे हैं, जो लोगों को प्राकृतिक चिकित्सा के बारे में जागरूक करते हैं।

सभी के लिए प्रेरणा बना श्रमदान

स्वास्थ्य कर्मियों की इस पहल की क्षेत्र में सराहना हो रही है।

टीम ने कहा कि मिलजुलकर किए गए इस काम से सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए और ऐसे सामाजिक कार्य निरंतर करते रहना चाहिए। इस अवसर पर पीएचसी के सभी अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे।

एमपीपीएससी राज्य सेवा मुख्य परीक्षा 8 से 13 अगस्त तक

नवभारत, बालाघाट। मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग (एमपीपीएससी), इंदौर द्वारा राज्य सेवा मुख्य परीक्षा-2025 का आयोजन 8 अगस्त से 13 अगस्त 2026 तक किया जाएगा। परीक्षा प्रतिदिन एक सत्र में प्रात: 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक ऑफलाइन पद्धति से आयोजित होगी। कलेक्टर श्री कुमार सत्यम ने इस परीक्षा के सुव्यवस्थित आयोजन एवं संचालन के लिए सभी आवश्यक तैयारियाँ करने के निर्देश दिये है। मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग इंदौर के निर्देशानुसार परीक्षा की प्रक्रियात्मक निष्पक्षता एवं पारदर्शिता सुनिश्चित करने तथा अभ्यर्थियों और नागरिकों का विश्वास बनाए रखने के उद्देश्य से बालाघाट जिले के लिए सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी डॉ. श्रीकांत पाण्डे (मो.नं.7697476674) को संभागीय पर्यवेक्षक नियुक्त किया गया है। डॉ. पाण्डे परीक्षा प्रारंभ होने के दो दिन पूर्व से जिले के परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लेंगे। वहीं परीक्षा के दौरान वे विभिन्न केंद्रों का आकस्मिक निरीक्षण कर परीक्षा संबंधी व्यवस्थाओं की निगरानी करेंगे।

शासकीय स्कूल में शिक्षकों का टोटा, भवन भी जर्जर

परेशान छात्र पहुंचे कलेक्ट्रेट सौंपा ज्ञापन

नवभारत कटंगी 5 अगस्त। तिरोडी तहसील के बम्हनी स्थित शासकीय बावनथड़ी गुरुकुल हाई सेकेंडरी विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने बदहाल व्यवस्थाओं को लेकर कलेक्ट्रेट पहुंचकर जिला प्रशासन को ज्ञापन सौंपा।छात्रों ने बताया कि स्कूल भवन करीब 40 वर्ष पुराना है और वर्तमान में काफी जर्जर स्थिति में पहुंच चुका है।इससे विद्यार्थियों और शिक्षकों की सुरक्षा को लगातार खतरा बना हुआ है।

6वीं से 8वीं तक कोई नियमित शिक्षक नहीं

ज्ञापन में बताया गया कि स्कूल में नर्सरी से 12वीं तक करीब 365 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं।आसपास के कई गांवों के बच्चे यहां पढ़ने आते हैं।

लेकिन शिक्षकों की भारी कमी है।नर्सरी से 5वीं तक सिर्फ 3 शिक्षक, 6वीं से 8वीं तक कोई नियमित शिक्षक नहीं और 9वीं से 12वीं तक सिर्फ 2 शिक्षक है।शिक्षकों की कमी के कारण नियमित कक्षाएं नहीं लग पा रही हैं और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिलना मुश्किल हो गया है।

पेयजल, फर्नीचर और स्वच्छता का अभाव

छात्रों ने बताया कि स्कूल में शुद्ध पेयजल, फर्नीचर और स्वच्छता जैसी मूलभूत सुविधाएं भी नहीं हैं। इससे रोजाना परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। ज्ञापन के माध्यम से छात्रों ने जिला प्रशासन से मांग की है कि पर्याप्त शिक्षकों की तत्काल नियुक्ति की जाए, स्कूल भवन की मरम्मत या नया भवन उपलब्ध कराया जाए, पेयजल, फर्नीचर और स्वच्छता जैसी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं।

परेशानी | प्राथमिकता के चक्कर में लेट हो रहीं सवारी गाड़ियां, यात्री परेशान

मालगाड़ी को ग्रीन सिग्नल, पैसेंजर और एक्सप्रेस को इंतजार

नैनपुर, नवभारत। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे रेलवे मालगाड़ियों को निर्बाध रास्ता देने के चक्कर में सवारी गाड़ियों (पैसेंजर व एक्सप्रेस) की रफ्तार पर ब्रेक लग गया है। हाल ही में 11701 मूक माटी एक्सप्रेस जो जबलपुर से रायपुर चलती उसे मालगाड़ी के चक्कर में बीते मंगलवार को निधानी स्टेशन पर 25/से 30 मिनट खड़ा रखा गया।

मालगाड़ियों को पहले निकालने की होड़ में सवारी गाड़ियों को बाहरी सिग्नलों या छोटे स्टेशनों की लूप लाइनों पर घंटों खड़ा रखा जा रहा है। इस अव्यवस्था से रोजाना सफर करने वाले यात्रियों का समय और धैर्य दोनों जवाब दे रहे हैं।

सवारी गाड़ियों से ज्यादा तरजीह मालगाड़ियों को

रेलवे ट्रैक पर इन दिनों सवारी गाड़ियों से ज्यादा तरजीह नागपुर डीविजन के कंट्रोलर के द्वारा इस ट्रेक पर मालगाड़ियों को दी जा रही है। मुख्य लाइनों को मालगाड़ियों के संचालन के लिए खाली कराया जा रहा है, जबकि यात्रियों से भरी ट्रेनें स्टेशनों के आउटर पर खड़ी रहती हैं।

बताया जाता है कि 1 से 2 घंटे का सफर अब 3 से 4 घंटे में पूरा हो रहा है। वहीं मुख्य स्टेशनों पर दूसरी ट्रेन पकड़ने वाले यात्रियों की ट्रेनें अक्सर छूट रही हैं जिससे दैनिक यात्री और छात्र सबसे ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं। वहीं रोजाना दफ्तर और कॉलेज पहुंचने में देरी हो रही है। बिना किसी पूर्व सूचना के ट्रेन को किसी भी छोटे स्टेशन पर रोक दिया जाता है और सामने से 2-3 मालगाड़ियां गुजार दी जाती हैं।'

चल रहा मालभाड़े की कमाई का 'गणित'

सूत्रों के मुताबिक, रेलवे प्रशासन का मुख्य ध्यान मालभाड़े से मिलने वाले राजस्व पर है। मालगाड़ियों को गंतव्य तक समय पर पहुंचाने के लिए उन्हें 'प्रायरिटी कॉरिडोर' दिया जा रहा है। हालांकि, इस चक्कर में आम यात्रियों के समय और सुविधाओं की पूरी तरह अनदेखी की जा रही है। जिसको लेकर यात्रियों की मांग है कि सवारी गाड़ियों की समयबद्धता तुरंत बहाल की जाए। एवं व्यस्त समय में मालगाड़ियों के परिचालन का समय बदला जाए। इसके साथ ही अकारण गाड़ियों को लूप लाइन पर खड़ा करने वाले अधिकारियों पर जवाबदेही तय की जाए।

बालाघाट के कान्हा में बाघों की मौत पर उठे सवाल

नवभारत, बालाघाट। जिले में विगत सालों में लगातार कई बाघों की मौतों ने प्रशासन के साथ वन्य जीव प्रेमियों को झकझोर दिया है । आखिर बाघ प्रदेश के नाम से पहचाने जाने वाला प्रदेश ओर विशेषकर बालाघाट जिले में इतने बाघों की मौत कैसे और क्यों हो रही है । सवाल तो कई प्रकार के हो रहे है सुरक्षा के दावे भी हो रहे है लेकिन क्या ऐसा जमीनी तौर पर हो रहा है लेकिन वास्तविकता से जवाब गायब है ।

सबसे प्रमुख होता है जिला में टेरिटोरियल फाइट यानी क्षेत्रीय वर्चस्व की लड़ाई भी बाघों के लिए जानलेवा साबित हो सकती है। जंगल में जगह सीमित होने पर बाघों के बीच संघर्ष की घटनाएं बढ़ने की आशंका रहती है। खनन और सड़क परियोजनाओं से बढ़ता दबाव, वन्यजीवों के भविष्य पर बड़ा सवाल भी पैदा करता है

बालाघाट खनिज संपदा से समृद्ध जिला है। जिले में पहले से ही विभिन्न क्षेत्रों में खनन गतिविधियां संचालित होती रही हैं। इसके साथ सड़क निर्माण और भारी वाहनों की आवाजाही भी वन क्षेत्रों पर दबाव बढ़ा सकती है। खनन का प्रभाव केवल उस क्षेत्र तक सीमित नहीं रहता जहां खुदाई होती है। खनन से जुड़ी सड़कें, परिवहन, ध्वनि प्रदूषण और मानवीय गतिविधियां वन्यजीवों के प्राकृतिक आवास को प्रभावित कर सकती हैं।

यदि जंगल के बड़े हिस्से आपस में कट जाते हैं तो वन्यजीवों के आवागमन के रास्ते बाधित हो सकते हैं। इसका सीधा असर बाघों और तेंदुओं जैसे बड़े मांसाहारी वन्यजीवों पर पड़ सकता है।

बालाघाट में प्रस्तावित या संचालित खनन गतिविधियों को लेकर पर्यावरणीय प्रभावों की वैज्ञानिक समीक्षा इसलिए बेहद जरूरी है। किसी भी परियोजना को मंजूरी देने से पहले यह देखना आवश्यक है कि उसका असर वन्यजीवों के आवास, कॉरिडोर और स्थानीय जैव विविधता पर कितना पड़ेगा।

क्योंकि अगर जंगल का रास्ता बंद हुआ, तो बाघ रास्ता बदलेंगे—और वह रास्ता खेतों या गांवों से होकर भी गुजर सकता है।

टाइगर स्टेट का तमगा सिर्फ बाघों की संख्या बढ़ाने से कायम नहीं रहेगा। असली चुनौती अब इन बाघों के लिए सुरक्षित आवास, पर्याप्त टेरिटरी और निर्बाध वन्यजीव कॉरिडोर बचाने की है।